आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 11 जुलाई, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

जूनोटिक या पशुजन्य रोगों की रोकथाम हेतु जागरूकता जरूरी

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों एवं बहनों। राम–राम सा।

आप सभी को विश्व जूनोटिक दिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं। भारत में पशुपालन एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है। यह छोटे व सीमान्त किसानों के लिए विशेषकर वर्षा सिचिंत क्षेत्रों में आजीविका का मुख्य स्त्रोत है। पशुपालन भारत में आय के अतिरिक्त साधन के साथ–साथ संस्कृति का भी हिस्सा है। भारत में लगभग दो करोड़ लोग आजीविका के लिए पशुपालन पर निर्भर है। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 6 जुलाई को विश्व जूनोटिक दिवस मनाया जा रहा है। इस दिवस के मनाने का प्रमुख उद्देश्य आमजन में जूनोटिक रोगों के प्रति जागरूकता फैलाना है। जूनोटिक रोग वे रोग होते हैं जो पशुओं से मनुष्यों और मनुष्यों से पशुओं में फैलते है। अतः पशुपालकों को वैज्ञानिक पशुपालन के साथ–साथ अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भारत में होने वाले प्रमुख जूनोटिक रोग रेबीज, ब्रुसेलोसिस, स्वाइन फ्लू, बर्ड फ्लू, इबोला निपाह, ग्लैण्डर्स, साल्मोनेलोसिस, लेप्टोस्पाइरोसिस व जापानीज एनसिफेलाइटिस आदि है। पशु प्रोटीन की बढ़ती मांग, गहन और अस्थिर खेती, वन्य जीवों का बढ़ता उपयोग व शोषण, मनुष्य का प्रकृति के साथ बेवजह खिलवाड़, जंगलों में आवाजाही व पूर्ण स्वच्छता न अपनाना, जूनोटिक रोग के बढ़ने के प्रमुख कारण है। हाल ही में राजस्थान में ग्लैण्डर्स का प्रभाव भी देखा गया है, जो कि एक घातक जूनोटिक रोग है। जूनोटिक रोगों से प्रतिवर्ष प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष हानि होती है। अतः जूनोटिक रोगों की रोकथाम हेतु वेटरनरी व मेडिकल दोनों प्रोफेशन में बेहत्तर तालमेल रखते हुए तथा मिलकर एक स्वास्थ्य संकल्पना पर कार्य करने तथा जूनोटिक रोगों के नियंत्रण हेतु मानव, स्वास्थ्य, पशु एवं पर्यावरण पर विशेष ध्यान देनें की आवश्यकता है। जूनोटिक रोगों के प्रभावी निंयत्रण हेतु एक–स्वास्थ्य, एक–संकल्पना पर कार्य करना, जूनोटिक रोगों के अनुसंधान को बढ़ावा देना, पशुजनित रोगों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना, खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लिए वैकल्पिक उपायों को विकसित करना, आदि पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी प्रकार पशुपालकों को जूनोटिक रोगों के बचाव हेतु पशुओं के टीकाकरण, कीड़ो व चूहों का प्रभावी निंयत्रण, आसपास के स्थानों को साफ रखना, पक्का हुआ एवं साफ उबले भोजन के सेवन करने आदि बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

कर्नल (प्रो.) विष्णु शर्मा

पशु विज्ञान केन्द्रों के भवनों के ऑनलाइन लोकार्पण अवसर पर माननीय राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री महोदय

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

जोधपुर वेटरनरी कॉलेज का वर्चुअल शिलान्यास एवं पांच पशु विज्ञान केन्द्रों के भवनों का लोकार्पण
राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री ने किया सम्बोधित

राजस्थान के राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने 10 जून को राज्य स्तरीय ऑनलाइन समारोह में वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय जोधपुर के भवन की आधारशिला रख कर पांच अन्य जिलों में स्थित पशु विज्ञान केन्द्रों के भवनों का लोकार्पण किया। समारोह की अध्यक्षता मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने की। इस अवसर पर राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने कहा कि राज्य में कृषि एवं पशुपालन के कार्यों के महत्व से विकास का आधार सुदृढ़ हो रहा है। उन्होंने कहा कि मारवाड़ जैसे शुष्क क्षेत्र में पशु प्रबंधन की कारगर नीति बनाने की आवश्यकता है जिससे आधुनिक विज्ञान और तकनीक का लाभ किसानों और पशुपालकों को मिल सके। कृषि खाद्य और पशु प्रोटीन उत्पादन का वैश्विक स्तर पर विपणन होना चाहिए। क्षेत्र के जागरूक किसान और पशुपालकों ने पारंपरिक पद्धतियों पर भी अच्छा कार्य किया है। जिसका डाक्यूमेंटेशन विश्वविद्यालय के स्तर पर होना चाहिए। आधुनिक और पारंपरिक ज्ञान के सम्मिश्रण से जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। राज्यपाल मिश्र ने कहा कि राज्य एक प्रमुख दुग्ध उत्पादक है और अतिरिक्त दूध का विपणन और प्रसंस्करण से पशुपालकों को अधिक लाभ दिलाया जा सकता है। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा डेयरी क्षेत्र में विकास कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि गुणवत्तायुक्त उत्पाद और विपणन की महत्ती आवश्यकता है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार की मंशा है कि राज्य में कृषि और पशुपालन का विकास तेज गति से होना चाहिए। देश की जीडीपी में राज्य के कृषि व पशुपालन योगदान को बढ़ाने के लिए 5 कृषि विश्वविद्यालय और वेटरनरी विश्वविद्यालय खोले गए हैं। कोरोना काल में कृषि और पशुपालन से जीडीपी में बढ़ोतरी का होना किसान और पशुपालकों के लिए गर्व की बात है। राज्य में मूक प्राणियों के लिए निःशुल्क दवा योजना लागू की है। 108 एम्बूलेंस सेवा की तर्ज पर पशुओं के लिए सेवाएं सुलभ होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में प्रति लीटर पशुपालकों को बोनस दिया जा रहा है। राज्य सरकार का प्रयास है कि पशु नस्ल सुधार हो और गांव–गांव डेयरी का फैलाव हो। पशु विज्ञान केन्द्र हर जिले में स्थापित हो इस बाबत आगे बढेंगे। राज्य में कृषि और पशुपालन क्षेत्र मजबूत है और इसे पूरा प्रोत्साहन देकर और मजबूत बनाया जाएगा। कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया और कृषि एवं पशुपालन राज्य मंत्री श्री भजनलाल जाटव ने भी समारोह को सम्बोधित किया। समारोह में कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने सभी का आभार जताते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में उच्च शिक्षा मंत्री भंवर सिंह भाटी एवं विधायकगण सूर्यकान्ता व्यास, सूरसागर (जोधपुर), रीटा चौधरी, मण्डावा (झुंझुनूं), गणेश डोगरा, डूंगरपुर, कन्हैयालाल, अविकानगर (टोंक), अभिनेष महर्षि, रतनगढ़ (चूरू), भोपालगढ़, जोधपुर के पुखराज, सहित संबंधित जिलों के जिला कलेक्टर, राज्य के पशुपालन एवं कृषि विभाग के उच्चाधिकारी, वेटरनरी विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, अधिकारीगण, शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिरकत की।

विश्व दुग्ध दिवस पर वर्चुअल कार्यशाला
बकरी और ऊंटों के दूध उत्पादन में राजस्थान प्रदेश का एकाधिकार

विश्व दुग्ध दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय में 1 जून को "दुग्ध गुणवत्ता एवं सुरक्षा में प्रगति" विषय पर ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर के सेन्टर ऑफ एक्सीलैंस ऑन मिल्क क्वालिटी एण्ड सेफ्टी द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों ने दुग्ध प्रयोगशाला के एन.ए.बी.एल. अधिस्वीकरण, दूध में प्रति जैविक और खाद्य सुरक्षा, जैविक दूग्ध उत्पादन और राजुवास जीओ पोर्टल के विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। कार्यशाला के प्रमुख अतिथि कामधेनू विश्वविद्यालय गाँधीनगर के कुलपति प्रो. एन.एच. केलावाला थे। कार्यशाला की अध्यक्षता कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने की। कार्यशाला के प्रारंभ में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह ने सभी का स्वागत किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश धूड़िया ने कार्यशाला का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत कर सभी का आभार जताया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टस, फैकल्टी सदस्य, विद्यार्थियों, प्रगतिशील किसान और पशुपालकों सहित देश–विदेश के पशुचिकित्सा विशेषज्ञों ने ऑनलाइन शिरकत की।

राज्य स्तरीय ई-पशुपालक चौपाल

जैविक अजोला से दुग्ध उत्पादन बढ़ायें

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्यस्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 9 जून को आयोजित की गई। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि पशुओं के प्रबंधन का 70 प्रतिशत खर्चा पशु आहार पर आता है एवं पूरे वर्ष भर हरे चारे के उपलब्धता की कमी पशुपालकों के लिए हमेशा परेशानी का कारण रहा है। अजोला जिसको हरा चारा भी कह सकते है यह पशुपालकों के लिए एक वरदान साबित हो रहा है। आंमत्रित विशेषज्ञ डॉ. गिरीश नारायण माथुर, पूर्व मुख्य वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, अजमेर ने अजोला उत्पादन पर विस्तृत परिचर्चा करते हुए बताया कि अजोला पानी पर तैरने वाली एल्गी है जिसको सभी पशुओं को हरे चारे के रूप में खिला सकते है। अजोला को वैज्ञानिक रूप से सुपर प्लांट भी कहते हैं। अजोला में लगभग 22 प्रतिशत प्रोटीन पायी जाती है। इसके अलावा इसमें विटामिन ए, विटामिन बी एवं खनिज लवणों में कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम, जिंक, लोहा, मैग्गनीज आदि प्रमुखतयः पाये जाते हैं। अजोला को खेत में खाद के रूप में भी काम लिया जा सकता है। ई–पशुपालक चौपाल में राज्यभर के पशुपालक, किसान विश्वविद्यालय के अधिकारिक फेसबुक पेज से जुड़े।

हौसला और सकारात्मक सोच से तनाव को कम करें

सामाजिक विकास एवं सहभागिता के तहत वेबिनार का आयोजन

दुनिया में परिवर्तन ही स्थायी है और जो परिवर्तन को नहीं स्वीकारता वह नष्ट हो जाता है, ये विचार वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने "सकारात्मकता के साथ तनाव का मुकाबला करें" विषयक वेबिनार में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये। कुलपति प्रो. शर्मा ने टीमवर्क, समाज को योगदान, परस्पर सद्भाव और संगठन के प्रति लगाव रखने को वर्तमान समय में अत्यावश्यक बताया। हौसला और सकारात्मक सोच को आगे रखकर ही हम तनाव को कम कर सकते हैं। विद्यार्थी अपने जीवन में सुप्रबंधन और दृढ़ ईच्छा शक्ति के बूते ही तनाव से मुक्त हो सकते हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के सामाजिक विकास एवं सहभागिता प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित वेबिनार में बतौर मुख्य वक्ता मैनेजमेंट ट्रेनर डॉ. गौरव बिस्सा ने वेंटिलेशन, टाइम मैनेजमेंट, स्विस चेज तकनीक, प्रभावी डेलिगेशन, मंकी मैनेजमेंट आदि से तनाव कम करने की युक्तियाँ बताई। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने संयोजक के रूप में वेबिनार का संचालन किया। सह समन्वयक डॉ. अशोक डांगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. दीपिका धूड़िया और डॉ. रजनी जोशी ने वेबिनार का सह–संयोजन किया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलटी

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा जल संरक्षण हेतु जागरूकता गोष्ठी का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव गाढ़वाला एवं जयमलसर में 22 एवं 23 जून को जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में जल संरक्षण गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने दैनिक जीवन में जल संरक्षण के विभिन्न उपायो के बारे में जानकारी दी। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, बीकानेर के सहायक अभियन्ता सुनील कुमार ने जल ही जीवन मिशन व राज्य सरकार की अन्य पेयजल योजनाओं के बारे में बताया तथा "जल है तो कल है" विषय की महत्ता बताई और ग्रामीणो को जल बचत के प्रति जागरूक किया गया। गोष्ठी में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के कनिष्ठ अभियन्ता नरपत ज्यांणी, सरपंच प्रतिनिधि मोहनलाल व अन्य ग्रामीण उपस्थित थे। वही जयमलसर ग्राम में प्रसार शिक्षा विभाग के प्राध्यापक डॉ. राहुल सिंह पाल ने कृषि क्षेत्र में जल संरक्षण हेतु प्रयोग में ली जाने वाली विभिन्न तकनीकों के बारे में जानकारी दी। इस गोष्ठी में सरपंच प्रतिनिधि विक्रम सिंह, उप सरपंच देवाराम, पंचायत सहायक कृपालदान चारण, मदन सिंह व अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

पशुपालन विभाग द्वारा पशुपालक सम्मान समारोह योजनान्तर्गत आवेदन आमंत्रित

राज्य स्तर पर दो पशुपालकों को 50-50 हजार रुपए दिए जाएंगे

31 जुलाई तक आवेदन करना होगा

पशुपालकों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करने, समृद्ध एवं उन्नत नस्ल के पशुओं को रखने तथा नवीनतम तकनीक द्वारा पशु देखभाल की ओर प्रोत्साहित करने के लिए प्रगतिशील पशुपालकों को सम्मानित किया जाएगा। इसके लिए पात्र प्रगतिशील पशुपालक नजदीकी पशुचिकित्सा संस्था के प्रभारी अथवा जिला कार्यालय में 31 जुलाई तक जरूरी दस्तावेजों के साथ आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। पशुपालन मंत्री लालचन्द कटारिया ने बताया कि पशुपालकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री ने इस वर्ष बजट घोषणा में इस योजना को प्रारम्भ किया है। इसके अनुसार प्रत्येक पंचायत समिति स्तर पर एक, पंचायत समिति स्तर पर प्रथम स्थान पर रहे चयनित पशुपालकों में से जिला स्तर पर दो तथा जिला स्तर पर चयनित समस्त पशुपालकों में से राज्य स्तर पर दो पशुपालकों का चयन किया जाएगा। राज्य में 422 पशुपालकों को प्रोत्साहन स्वरूप 53.20 लाख रुपए प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। मंत्री ने बताया कि योजनान्तर्गत चयनित पशुपालकों को राज्य स्तरीय समारोह में सम्मानित किया जाएगा। पंचायत समिति स्तर पर चयनित पशुपालक को 10 हजार रुपए, जिला स्तर पर 25 हजार रुपए तथा राज्य स्तर पर 50 हजार रुपए की राशि पारितोषिक स्वरूप प्रदान की जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रत्येक पंचायत समिति से एक–एक, जिला स्तर पर दो दो एवं राज्य स्तर पर दो पशुपालकों सहित कुल 422 पशुपालकों को प्रोत्साहन स्वरूप 53.20 लाख रुपए प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 7, 9, 15, 17, 19 एवं 30 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 125 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 1, 7, 10 एवं 24 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 1, 5, 17, 22 एवं 26 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया –लाड़नू द्वारा 1, 5, 12 एवं 26 जून को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 98 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 7, 11, 15 एवं 19 जून को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 69 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 16 एवं 24 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 61 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 10, 15, 16 एवं 30 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 119 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 7, 18, 22, 24 एवं 25 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 146 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 14, 22 एवं 28 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 59 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 1, 5, 13, 17 एवं 24 जून को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 128 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 14, 19, 26 एवं 29 जून को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 95 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5, 8, 11, 15, 18 एवं 29 जून को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 4, 8, 11 एवं 23 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 82 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 7, 15, 22 जून को एक दिवसीय तथा 9–10 जून को दो दिवसीय ऑनलाइन कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 165 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुपालक कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, द्वारा राज्य के पशुपालकों के हितार्थ माह मई में प्रारम्भ किये गये ऑनलाइन पशुपालक कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम अभियान के अन्तर्गत राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा जिले के पशुपालकों एवं किसानों के लिए कुक्कुट पालन, पशु प्रजनन प्रबंधन, स्वस्थ दुग्ध उत्पादन और प्रसंस्करण, गाय–भैंस स्वास्थ्य प्रबंधन, मछली पालन, प्रजनन एवं नस्ल सुधार, आहार प्रबंधन, बकरी पालन एवं प्रबंधन, अश्वपालन आदि विभिन्न विषयों पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इन प्रशिक्षणों के माध्यम से राज्य के पशुपालक लाभान्वित होकर अपना कौशल विकास कर उसे स्वःरोजगार के रूप में अपना कर अपनी आमदनी को ओर अधिक बढ़ा सकते है। इस अभियान के तहत श्रृखंला के रूप में पांच दिवसीय निःशुल्क ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ, कोटा, झुंझुनूं, टोंक, बोजूदां, बाकलिया, धोलपुर, जोधपुर, कुम्हेर एवं रतनगढ़ द्वारा माह जून माह में आयोजित कुल 10 प्रशिक्षण के तहत कुल 839 पशुपालक एवं किसान लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा कोविड़–19 के बचाव एवं जागरूकता अभियान कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय के अधीनस्थ राज्य के विभिन्न जिलों में संचालित पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा कोविड़–19 महामारी के बचाव एवं जागरूकता अभियान कार्यक्रमों के अन्तर्गत जिलों के पशुपालकों एवं किसानों के साथ–साथ आम लोगों को कोरोना महामारी के बचाव एवं इस वैश्विक महामारी के प्रति बरती जाने वाली सावधानियों, टीकाकरण के बारे में जानकारी दी गई। इसी श्रृंखला में माह जून में पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर, सूरतगढ, कोटा, झुंझुनूं, टोंक, सिरोही, बोजूदां, बाकलिया, डूंगरपुर, धोलपुर, जोधपुर, कुम्हेर एवं रतनगढ़ द्वारा कुल 36 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिससे कुल 873 पशुपालक एवं किसानों को इस वैश्विक बीमारी से जागरूक कर जानकारी दी गई।

मधुमक्खी पालन : एक लाभकारी व्यवसाय

मधुमक्खी पालन वर्तमान समय में खेती के साथ साथ समानान्तर किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण व्यवसाय बन चूका है। इस व्यवसाय में कम लागत और कम पूंजी लगाकर ज्यादा मुनाफा कमाया जा सकता है। मधुमक्खी पालन के उत्पाद के रूप में शहद और मोम आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। सरकार ने भी इसे बढ़ावा देने के लिए कई प्रकार की ऋण व्यवस्थाएं की हैं। चूँकि यह उद्योग लघु उद्योग श्रेणी के अंतर्गत आता है इसलिए इस व्यवसाय के लिए दो से पांच लाख तक का लोन आसानी से उपलब्ध हो जाता है। हमारे देश में मधुमक्खी की पांच प्रजातियाँ एपीस डोंरसेटा, एपीस फलेरिया, एपीस इंडिका, एपीस मैलिफेटा और मैलापोना ट्राईगोना पाई जाती हैं। इनमें प्रथम चार प्रजातियों को पालन हेतु प्रयोग किया जाता है।

मधुमक्खी परिवारः एक परिवार में एक रानी, कई हजार श्रमिक तथा 100–200 नर होते है, जिनसे एक साल में 8–10 किलो शहद (प्रति छत्ता) मिलता हैं।

मधमक्खियों के पालने का प्रबंधन कार्य और विशेषताएं :

मौन गृहः प्राकृतिक रूप से मधुमक्खी अपना छत्ता पेड़ पुराने खंडहरों आदि में लगाती हैं। इनमें शहद प्राप्ति हेतु इन्हें काटकर निचोड़ा जाता है। इस क्रियाविधि में अंडा लार्वा व प्यूपा आदि का रस भी शहद में मिल जाता है, इससे बचने के लिए वैज्ञानिकों द्वारा मधुमक्खी पालन हेतु मौनगृह व मधु निष्कासन यंत्र का आविष्कार किया गया। मौनगृह लकड़ी का एक विशेष प्रकार से बना बक्सा होता है। यह मधुमक्खी पालन में सबसे महत्वपूर्ण उपकरण होता है। मौनगृह को लोहे के एक चौकोर स्टैंड पर स्थापित किया जाता है। स्टैंड के चारों पायों के नीचे पानी से भरी प्यालियाँ रखें ताकि चीटियाँ मौनगृह में प्रवेश नहीं कर सकें।

बसंत ऋतु में मौन गृह का प्रबंधन : बसंत ऋतु मधुमक्खियों के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। इस समय सभी स्थानों में पर्याप्त मात्रा में पराग और मकरंद उपलब्ध रहते है जिससे मधुमक्खियों की संख्या दुगुनी बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप शहद का उत्पादन भी बढ़ जाता है। बसंत ऋतु प्रारम्भ में मधुमक्खियों को कृत्रिम भोजन देने से उनकी संख्या और क्षमता बढती है। जिससे अधिक से अधिक उत्पादन लिया जा सके। यदि छत्तों में शहद भर गया हो तो मधु निष्कासन यंत्र से शहद को निकल लेना चाहिए जिससे मधुमक्खियां अधिक क्षमता के साथ कार्य कर सके। यदि नरो की संख्या बढ़ गयी हो तो नर प्रपंच लगा कर इनकी संख्या को नियंत्रित कर देना चाहिए।

शरदऋतु में मौन गृह का प्रबंधन : शरद ऋतु में मधुवाटिका को सर्दी से बचाना जरुरी हो जाता है। सर्दी से बचने के लिए मधुवाटिका को टाट की बोरी का दो तह बनाकर आंतरिक ढक्कन के नीचे बिछा देना चाहिए।

ग्रीष्म ऋतु में मौन गृह का प्रबंधन : इस समय मधुवाटिका के आस पास पानी की उचित व्यवस्था होनी चाहिये। मधुवाटिका को लू से बचाने हेतु छप्पर का प्रयोग करें जिससे गर्म हवा सीधे मधुवाटिका के अंदर न घुस सके ।

हद निष्कासन : मधुवाटिका में स्थित चौखटों में जब 75 से 80 प्रतिशत तक तक शहद जमा हो जाए तो उस शहद का निष्कासन किया जाता है। इसके लिए सबसे पहले चाकू से या तेज गर्म पानी डालकर छत्ते से मोम की ऊपरी परत उतारते हैं फिर इस चौखट को शहद निष्कासन यंत्र में रखकर हैंडिल द्वारा घुमाते हैं जिससे अपकेन्द्रिय बल द्वारा शहद बाहर निकल जाता है व छत्ते की संरचना को भी कोई नुकसान नहीं पहूंचता। इस चौखट को वापस मधुखंड में स्थापित कर दिया जाता है एवं मधुमक्खियाँ छत्ते के टूटे हुए भागों को ठीक करके वापस शहद भरना प्रारंभ कर देती हैं। शहद को बारीक कपड़े से छानकर व प्रोसेसिंग के उपरांत स्वच्छ व सूखी बोतलों में भरकर बाजार में बेचा जा सकता है।

डॉ. एल. एन. साँखला, डॉ. लोकेश टाक, डॉ. मनीषा सिंगोदिया
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

गर्मी और उमस में तेजी से फैलता है गलघोंटू और लंगड़ा बुखार

जुलाई–अगस्त का महीना बारिश का महीना है। खेती–बाड़ी व बागवानी के लिए यह बारिश बहुत फायदेमंद है। इस मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा भी बहुतायत में उग जाता है, परन्तु साथ ही बारिश के मौसम में वातावरण में उमस भी काफी बढ़ जाती है। अधिक गर्मी व उमस के कारण तथा तापमान में अधिक उतार–चढ़ाव होने के कारण पशुओं के कुछ संक्रामक रोगों के जीवाणुओं को उचित वातावरण मिल जाता है तथा यह पशु शरीर में प्रवेश कर रोग पैदा कर सकते है। बारिश के मौसम में अधिक गर्मी व उमस के कारण पशुओं में गलघोंटू और लंगड़ा बुखार होने की संभावना बढ़ जाती है।

गलघोंटू रोगः– इस रोग से भैंस, गाय, भेड़, बकरी, ऊंट, और सूअर आदि प्रभावित होते है। परन्तु भैंसों में गलघोंटू रोग का प्रकोप ज्यादा होता है। इस रोग का प्रमुख कारण पाश्च्यूरेला मल्टोसिडा नामक जीवाणु है। इस रोग में पशु को तेज बुखार हो जाता है, यह बुखार 104 डिग्री से 107 डिग्री फेरेनहाइट तक हो सकता है। इस रोग में पशु को तेज बुखार हो जाता है। रोगी पशु का गला सूज जाता है। पशु को सांस लेने में परेशानी होती है और पशु बहुत बैचेन हो जाता है। श्वांस के साथ गर्र–गर्र की आवाज करता है। पशु के मुंह से लार टपकती है। पशु घास खाना व जुगाली करना बंद कर देता है। यह रोग बहुत खतरनाक है यदि समय पर पशु का इलाज न किया जाये तो इस रोग में मृत्यु दर बहुत अधिक है।

लंगड़ा बुखारः– यह रोग अधिकतर गायों में होता है तथा क्लोस्ट्रीडियम नामक जीवाणु इसका मुख्य कारण है। पशु को बहुत तेज बुखार हो जाता है तथा यह बुखार 104–106 डिग्री फेरेनहाइट तक हो सकता है। इस रोग में पुट्ठों पर दर्द भरी सूजन, चलने में परेशानी और कुछ समय पश्चात पशु जमीन पर बैठ जाता है। सूजन वाला हिस्सा कुछ काला सा नजर आता है, और उसके दबाने से चरड़–चरड़ की आवाज आती है। पशु खाना–पीना बंद कर देता है। कुछ समय बाद सूजन एवं पशु को दर्द नहीं होता है, खाल भी कुछ समय बाद सूखी हो जाती है और तिड़कने लगती है। पशु की 48 घण्टें के अन्दर ही मृत्यु हो जाती हैं।

गलघोंटू व लगंड़ा बुखार रोग तेजी से फैलता है एवं एक साथ कई पशु इससे ग्रसित होते हैं अतः सावधानी से ही इस रोग की रोकथाम सम्भव है। चूंकि यह दोनो रोग बरसात के महीनें में होते है अतः बरसात से पूर्व मई–जून के महीनें में इसका रोग–प्रतिरोधक टीकाकरण जरूर करवाना चाहिए।

रोग से बचाव एवं उपचार :–

- चार माह से बड़े सभी पशुओं को प्रतिवर्ष मानसून पूर्व टीका लगवायें।
- रोगी पशु को अन्य पशुओं से अलग बांध कर चारा–पानी की व्यवस्था करें व रोगी पशु का झूंठा चारा पानी अन्य पशुओं को न दें।
- रोगी पशु को अलग कर पशुचिकित्सक की सलाह से इलाज करावें।
- बाड़े के फर्श को चूने के पानी से अच्छी तरह साफ करें व फिनाइल औषधि का छिड़काव करें।
- रोग से मरने वाले पशु को घसीट कर न ले जायें (गाड़ी में डाल कर ले जाये) व गांव के बाहर नदी, नाले, चारागाह आदि से दूर किसी जगह पर चूने नमक के साथ गड्डे में दफना दें।
- बीमार पशु/बीमारी से मृत पशु के खून/गले की सूजन के सेम्पल की प्रयोगशाला जांच से प्रभावी औषधि का पता लगाया जा सकता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं के पोषण की नवीन तकनीकों को अपनाएं पशुपालक

जुगाली करने वाले पशु (गाय, भैंस, भेड़ व बकरी) कम पौष्टिक आहार जैसे घास व चारे को दूध व मांस जैसे उत्तम पौष्टिक आहार में परिवर्तित करने की क्षमता रखते हैं। इन पशुओं के पेट में मनुष्यों से अलग चार भाग होते हैं जिनमें सबसे बड़ा भाग रूमन होता है। रूमन में करोड़ों सूक्ष्म जीव होते हैं जो पशु आहार के अवयवों जैसे घास, फसलों के अवशेष, वृक्षों के पत्ते, टहनियां, तूड़ी, अनाज के छिलके, खल जिन्हें मनुष्य नहीं पचा सकते उन्हें पचाने में सहायक होते हैं। इस प्रकार के अरबों सूक्ष्म जीवाणु वाला रूमन प्रकृति ने केवल जुगाली करने वाले पशुओं को ही प्रदान किया है। रुमन में ये सूक्ष्मजीव कम गुणवत्ता वाले पोषक तत्वों जैसे यूरिया, कई अखाद्य व व्यर्थ पदार्थों और रेशों को उच्च गुणवत्ता वाली प्रोटीन व ऊर्जा में परिवर्तित कर देते हैं। इसलिए वैज्ञानिक भाषा में ऐसा कहा जाता है कि सूक्ष्मजीवों की आपूर्ति पूरी करना मतलब पशु की आपूर्ति करना है। इस आधार पर अनेकों वैज्ञानिक तकनीकें विकसित की गयी है जिनसे पशुओं की उत्पादन क्षमता बढ़ सके।

यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक : यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक, यूरिया, मोलासिस, खनिज मिश्रण और अन्य सामग्री को उपयुक्त अनुपात में मिलाकर तैयार किया जाता है। यह पशुओं के लिए ऊर्जा, प्रोटीन और खनिज तत्वों को आसानी से उपलब्ध कराने का बेहतर स्रोत है। हरे चारे की कमी व अकाल के समय में यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक बहुत ही उपयोगी है। इस तकनीक द्वारा बनाई गई ईंट को पशु धीरे–धीरे लम्बे समय तक चाटते रहते हैं जिससे उसमें उपस्थित यूरिया, मोलासिस व खनिज समान मात्रा में पशु को प्राप्त होते रहते हैं। यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक बनाने के लिए सभी अवयवों को तोल लें। सर्वप्रथम यूरिया व शीरा का अच्छी तरह से घोल बना लें और सीमेंट, खनीज लवण और नमक के मिश्रण को इस घोल में अच्छे से मिला लें। प्राप्त मिश्रण को गेंहू की चापड़ में धीरे धीरे मिलाते हुए गूँथ लें। गूँथे हुए मिश्रण को साँचे में डालें व अच्छी तरह दबाकर 1–2 दिन सूखने के लिए छोड़ दें। सूख जाने पर यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक तैयार हो जाता है। ध्यान दें, यूरियायुक्त आहार केवल जुगाली करने वाले पशुओं को छः माह से अधिक उम्र के बाद ही खिलाने चाहिए।

यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक का संघटन (मात्रा 10 किलोग्राम)

मिश्रण	मात्रा
यूरिया	1 किलोग्राम
शीरा	5 किलोग्राम
गेहूँ की चापड़	2 किलोग्राम
सीमेंट	1 किलोग्राम
खनिज लवण	500 ग्रा.
नमक	500 ग्रा.

यूरिया उपचारित चारा : अकाल और चारे की कमी के दौरान यूरिया उपचरित चारा पशुओं के लिए एक उपयुक्त विकल्प है। इसमे पशु को जीवन निर्वाह हेतु प्रोटीन व ऊर्जा की प्राप्ति आसानी से हो जाती है। यूरिया तकनीक द्वारा उपचारित चारा नर्म होने के कारण पशु चाव से खाते हैं। उपचारित चारा खिलाकर दाना मिश्रण की मात्रा में 25 प्रतिशत तक की कमी कर सकते है। चारे का उपचार करने हेतु 4 किग्रा. यूरिया 40 लीटर पानी में घोलें व एक क्विंटल चारे को फैलाकर उसपर धीरे–धीरे घोल का छिड़काव करें और अंत में पॉलीथीन की चादर से ढ़ककर तीन सप्ताह तक रखें। इसके पश्चात् ढ़ेर को एक तरफ से खोलकर चारा निकालकर हवा में रखें। उपचारित चारे की मात्रा पशु आहार में धीरे–धीरे बढ़ानी चाहिए।

सम्पूर्ण पशु आहार ईंट : विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थों से रूमन का वातावरण बदलता रहता है। सम्पूर्ण पशु आहार से रूमन का वातावरण एक सा रहता है जिसका सूक्ष्म जीवों पर प्रभाव अच्छा रहता है व पाचन अच्छा रहता है। सम्पूर्ण पशु आहार में चारा एवं दाना मिश्रण मिलाकर सस्ता एवं संतुलित आहार पशु की आवश्यकता के अनुसार बनाया जाता हैं, सिर्फ जीवन निर्वाह प्रकार के सम्पूर्ण आहार में लगभग 30 प्रतिशत दाना मिश्रण मिलाया जाता हैं वहीं उत्पादन प्रकार के सम्पूर्ण आहार में 50 प्रतिशत तक दाना मिश्रण मिलाया जाता हैं। इस प्रणाली में उन कम गुणवत्ता वाले चारों का प्रयोग भी किया जा सकता है जिन्हें जानवर प्रायः न के बराबर खाता है। इस विधि में पहले अनाज, चावल की चोकर, गेहूँ की चोकर, मूँगफली या सरसों की खल, खनिज मिश्रण एवं साधारण नमक को मिलाकर एक सस्ता दाना मिश्रण बनाते हैं। इसके पश्चात् सरसों के भूसे/बाजरा की कडबी/गेहूँ के भूसे में दाना मिश्रण, शीरा एवं यूरिया को एक साथ मिलाकर मशीन द्वारा दबाकर ईंटें बना ली जाती हैं।

बाईपास प्रोटीन : अधिक दूध उत्पादन करने वाले पशुओं को जब उच्च गुणवत्ता युक्त प्रोटीन वाली खल देते हैं, तब रुमन मे जीवाणुओं द्वारा प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण भाग जो पशु आहार का सबसे अधिक महंगा हिस्सा होता है, बर्बाद कर दिया जाता है। इन प्रोटीन की खलियों का उपयुक्त रासायनिक उपचार करने से यह प्रोटीन सीधा ही गाय के दूध उत्पादन में अपना योगदान देती है, इस उपचार को बाईपास प्रोटीन तकनीक कहते हैं। इस विधि में किसी भी प्रोटीनयुक्त आहार जैसे तिल्ली खल, सोयाबीन खल, मूँगफली खल आदि को ताप से व विभिन्न प्रकार के रसायनों जैसे फॉर्मेल्डिहाइड, आदि द्वारा उपचारित कर सुखा लिया जाता है व उसके पश्चात् जानवर को आहार के रूप में दिया जाता है। उपचारित खल को प्रतिदिन एक किलो प्रति पशु के हिसाब से खिलाया जाता है, अधिक दूध देने वाले पशुओं में इसे प्रति दिन 4–5 किलो तक भी दे सकते हैं।

बाईपास फैट : आमतौर पर, ब्यांत के बाद और अधिक दूध देने वाले पशुओं के आहार में उर्जा की कमी पाई जाती है। ब्यांत के बाद दूध उत्पादन बढने से इस उर्जा का अभाव और अधिक बढ़ जाता है। उर्जा का अभाव वाले कमजोर पशु वापिस ताव में देरी से आते है। इस वजह से पशुओं के ग्याभिन होने में देरी होती है व पशु दूध भी कम देते हैं। किसान अपने पशुओं को आमतौर पर तेल या घी पिलाते हैं। परंतु यह किफायती नहीं है। अधिक दूध देने वाले, ग्याभिन एवं ब्यांत के बाद पशुओं को बायपास फैट खिलाकर ऊर्जा की कमी को पूरा किया जा सकता है। इसे पशुओं के आहार में प्रजनन के 10 दिन पहले से लेकर ब्याने के 90 दिनों बाद तक प्रतिदिन 100 से 150 ग्राम प्रति पशु के हिसाब से दिया जा सकता है। दुधारू पशुओं को बायपास फैट, घी/तेल पिलाने के बजाय ज्यादा फायदेमंद होता है और इससे दूध उत्पादन और प्रजनन क्षमता में सुधार आता है।

अतः पशुपोषण की नवीन तकनीकों को अपनाकर पशुपालक अपने पशुओं को स्वस्थ एवं उत्पादनशील बनाए रख सकते है।

डॉ. मंगेश कुमार एवं डॉ. लूणाराम
टीचिंग एसोसिएट, राजुवास, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जुलाई, 2021

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी	श्रीगंगानगर, बाँसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, धौलपुर, अजमेर, सीकर, पाली, उदयपुर, सवाई माधोपुर, अलवर
नील जिह्वा रोग	बकरी, भेड़	भीलवाड़ा, बाड़मेर, अजमेर, दौसा, धौलपुर, चूरू
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	सीकर, अलवर, धोलपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, श्रीगंगानगर, टोंक, बूंदी, सिरोही, हनुमानगढ़, राजसमन्द
ठप्पा रोग (लंगड़ा बुखार)	गौवंश, भैंस	झालावाड़, चित्तोड़गढ़, झुंझुनू, अलवर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर
फड़किया	बकरी, भेड़	चूरू, बीकानेर, नागौर, अजमेर, झुंझुनू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, धोलपुर
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस, गौवंश	उदयपुर, बांसवाड़ा, हनुमानगढ़, बूंदी, भरतपुर, कोटा, बारां
बबेसिओसिस, थाइलेरिओसिस	गौवंश	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं फीता –कृमि)	गौवंश, भैंस, बकरी, ऊँट	राज्य के समस्त जिलों में

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

नारायण नें पशुपालन को बनाया आजीविका का साधन

हमारे कृषि प्रधान देश में बहुत सारे किसान ऐसे भी है जो कृषि के साथ–साथ पशुपालन जैसे नवाचार करके किसानों की आमदनी बढ़ाने में भागीदारी निभा रहें हैं। राजस्थान के बीकानेर जिले के लूणकरनसर के चक 294 आरडी के रहने वाले नारायण गोदारा पशुपालन व डेयरी व्यवसाय से जुड़कर दूसरे किसानों और पशुपालकों के लिए प्रेरणास्त्रोत बन रहे हैं। नारायण ने पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरनसर द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में समय–समय पर भाग लेकर उन्नत पशुपालन करने के लिए चारा प्रबंधन, संतुलित पशु आहार, पशु आहार में खनिज लवणों का महत्व, अजोला घास, कृत्रिम गर्भाधान, टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवाओं का महत्व, ग्याभिन पशुओं की देखभाल एवं प्रबंधन आदि विषयों की जानकारी प्राप्त की। इन्होंने पशुपालन में नवीनतम तकनीक के अन्तर्गत अजोला इकाई स्थापित कर पशुओं के लिए पौष्टिक एवं प्रोटीन युक्त हरा चारा प्राप्त किया। पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरनसर के वैज्ञानिकों की मदद से अजोला इकाई पर आत्मा योजनान्तर्गत मिलने वाली सब्सिडी भी प्राप्त की। वर्तमान में नारायण के पास साहीवाल व राठी नस्ल की 35 गायें है, जिससे वह 110–120 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन करते हैं। इस व्यवसाय से इनकी वार्षिक आय लगभग 4–5 लाख रूपये तक हो जाती है। नारायण ने डेयरी को अपनी आय का मुख्य स्त्रोत बनाकर दूसरे किसानों और पशुपालकों के लिए मिशाल कायम की है।

सम्पर्क- नारायण, गांव- चक 294 आरडी, तहसील-लूणकरनसर (बीकानेर) मो. नं. 8239820243

निदेशक की कलम से...

मानसून में करें पशुओं की देखभाल

राजस्थान में लगभग जुलाई के प्रथम सप्ताह में मानसून का आगमन होता है। मौसम विभाग की भविष्यवाणी के अनुसार इस वर्ष अच्छी बारिश होने की सम्भावना है। अतः मानसून में पशुओं के उचित देखभाल व बीमारियों से बचाने हेतु उचित प्रबंधन आवश्यक है, क्योंकि इस समय अधिक आर्द्रता के कारण तापमान में उतार–चढ़ाव अधिक रहता है। मानसून में आर्द्रता बढ़ने, गर्मी के कारण व उचित साफ–सफाई नहीं होने पर, मल–मूत्र के कारण विभिन्न संक्रामक रोग होने की संभावनाएं बढ़ जाती है, साथ ही तापमान के उतार–चढ़ाव के कारण पशु की पाचन क्रिया व रोग–प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती हैं। मानसून से पहले पशुशाला की छत की मरम्मत करावें, जिससे बारिश का पानी इकट्टा होकर टपके नहीं। पशुशाला की खिड़कियों को खुली रखे तथा गर्मी व उमस से बचाने हेतु पंखों का उपयोग भी पशु बाड़ों में करें। बाड़े के आसपास बरसात का पानी, कचरा व गंदगी इक्कठा नही होने देवें, ताकि मच्छर व परजीवियों के संक्रमण को रोका जा सके। पशुओं को संक्रामक रोग जैसे, गलघोंटू, लगड़ा बुखार, फड़किया रोग आदि से बचाने हेतु समय–समय पर टीकाकरण करवा लेना चाहिए क्योंकि कई बार इन बीमारियों से पशु की अकाल मृत्यु हो जाती है एवं पशुपालक को आर्थिक नुकसान हो सकता है। जहां तक सम्भव हो पशुओं को ठाण पर ही चराई करावें। चरने के लिए बाहर न लेकर जाएं क्योंकि बारिश के मौसम में गीली घास पर कई तरह के परजीवी होने के कारण चारे के साथ पेट में चले जाते हैं। पशुओं को पीने के लिए स्वच्छ पानी उपलब्ध करावें, कभी भी जोहड व गढ्े में एकत्रित हुए पानी को न पीने देवें। चारे व दाने का भण्डारण भी सुखे स्थान पर करें अन्यथा कई बार नमी के कारण कवक पैदा हो जाते है, जो कि पशुओं को नुकसान पहुंचाते है। पशुओं को परजीवियों से बचाने हेतु पशुचिकित्सक की सलाह पर वजन के अनुसार कृमिनाशक दवा का उपयोग समय–समय पर करते रहें।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया